सागर पंचकल्याणक में 63 पिच्छी शामिल होंगी

सागर। भाग्योदय तीर्थ परिसर सागर में 8 से 14 दिसम्बर को होने वाले पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महाराज की परम प्रभाव शिष्य मुनि श्री योगसागर महाराज के ससंघ सानिध्य में होंगे। पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव में 4 मुनिसंघ और 5 आर्यिका संघों की उपस्थिति रहेगी। मुकेश जैन ढाना ने बताया कि मुनिश्री योगसागर महाराज और मुनिश्री अभयसागर महाराज सागर में विराजमान हैं। खुरई में विराजमान मुनिश्री पवित्रसागर प्रयोग सागर महाराज और गौरझामर में विराजमान मुनिश्री विमल सागर महाराज ससंघ सागर की ओर विहार कर पहुंचेंगे, आर्यिका ऋजुमति माताजी बांदरी से, आर्यिका गुणमति माताजी अभाना से, आर्यिका अनंतमति माताजी कुंडलपुर से, आर्यिका भावनामति माताजी कटनी से पंचकल्याणक महोत्सव में पहुंचेगी।

पात्रों का चयन 4 को

सागर। भाग्योदय परिसर में होने वाले पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव के प्रमुख पात्रों का चयन मुनि श्री योगसागर महाराज के ससंघ सानिध्य में 4 दिसंबर मंगलवार को दोपहर 1:30 पर भाग्योदय में होगा।

नवदुनिया
भोपाल, सोमवार 03 दिसंबर 2018

Scanned by CamScanner

मुनिसंघ का सागर की ओर विहार

नवभारत न्यूज

गौरझामर 2 दिसम्बर मुनिश्री विमल सागर, मुनिश्री अनंत सागर, मुनिश्री धर्म सागर, मुनिश्री अचल सागर, मुनिश्री अतुल सागर, मुनिश्री भाव सागर महाराज, श्री पारसनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर गौरझामर से चातुर्मास के बाद प्रथम बिहार हो गया है।

मुनिसंघ सागर में 8 से 13 दिसंबर तक होने वाले पंचकल्याणक में शामिल होंगे। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के भी पधारने की संभावना है। इस कार्यक्रम में अनेक मुनि एवं आर्यिका संघ आ रहे हैं। आज गौरझामर की समस्त समाज ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से विदाई दी। सभी पुरुष महिलाएं युवा एवं बालक बालिकाएं मुनि संघ के साथ पदयात्रा मे चले। सभी ने अपने अपने घर पर पाद प्रक्षालन एवं आरती की। मुनि श्री 4 दिसंबर को प्रात: काल भाग्योदय तीर्थ पहुंचेंगे वहां पर पंचकल्याणक महोत्सव के पात्रों का चयन होगा। वहां पर मुनि श्री योग सागर महाराज ससंघमुनि श्री अभय सागर महाराज ससंघ विराजमान है। मुनि श्री ससंघ शाम को सुरखी पहुंचे। वहां पर आयिका श्री पवित्र मति माताजी ससंघ ने मुनि श्री की अगवानी की । दिव्य घोष एरावत हाथी म्यूजिकल ग्रुप आदि साथ चल रहे थे। पंचायत कमेटी गौशाला कमेटी आचार्य श्री विद्यासागर दिव्य घोष पाठशाला परिवार महिला मंडल बालिका मंडल एवं समाज के सभी लोगों ने पदयात्रा की। गौरझामर में मुनि श्री का आगमन 15 जुलाई 2018 को हुआ था लगभग 4 माह से अधिक का प्रवास रहा। मुनिसंघ के वर्षाकालीन चार्तुमास के दौरान दस लक्षण पर्व से लेकर भगवान महावीर स्वामी के मोक्ष कल्याण तक के कार्यक्रम संपन्न हुए। जिसमें श्रृद्धालु द्वारा बढ़ चढ़ हिस्सा लिया।

नव भारत भोपाल, सोमवार, 3 दिसंबर,

Scanned by CamScanner

युवा जैन मिलन द्वारा मोटिवेशन और कैरियर पर कार्यक्रम हुआ

नवभारत न्यूज

सागर 2 दिसम्बर.अंकुर कॉलोनी मकरोनिया में विराजमान बुंदेली संत मुनि श्री 108 सुव्रतसागर जी महाराज के मंगल सानिध्य में मोटिवेशनल स्पीच एवम कैरियर कॉउन्सिल प्रोग्राम का आयोजन युवा जैन मिलन अंकुर क्षेत्र मकरोनिया द्वारा किया गया ।

विद्या भवन मकरोनिया मे दोपहर में कक्षा 10जी से लेकर सभी अध्यनरत बच्चों में 100 वच्चो ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत कु परिधि के मंगलाचरण से हुई। युवा जैन मिलन के सांस्कृतिक मंत्री राहुल जैन हीरापुर द्वारा मोटिवेशनल स्पीच एवम कैरियर के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई । अंकित जैन और वैभव जैन द्वारा वच्चो द्वारा पूछे गए सवालों के जबाब दिए गए। मुनिश्री सुव्रतसागर महाराज ने कार्यक्रम के दौरान बच्चो से कहा कि अपने जीवन मे एक लक्ष्य निर्धारित करके आगे बढ़ना चाहिए। पढ़ाई के साथ साथ अपने संस्कारो को भी ध्यान में रखे। यही जीवन को सफलता की कुंजी है । मुनि श्री ने कहा कि वच्चे खूब पढ़े ,परंतु कभी भी समाज ,परिवार ,एवं अपने बुजुर्गों को न भूले। कार्यक्रम में अतिथि भारतीय जैन मिलन क्षेत्र क्र10 के संयुक्त मंत्री मनोज लालो, जैन मिलन मकरोनिया के कार्य अध्यक्ष वीर राकेश जैन वीर अरविंद जैन वीर संपत जैन, मंत्री प्रसन्न जैन , मृगेंद्र जैन , अंसुल जैन सहित युवा मिलन की युवा वीर उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत मे आभार प्रदर्शन अध्यक्ष युवावीर सुकमाल जैन नैन्धरा एवं संचालन वीर राकेश जैन द्वारा किया गया ।

नवभारत सागर, सोमवार 03 दिसंबर, 2018

Scanned by CamScanner

जिंदगी आसान नहीं, बनाना पड़ता है

कटरा नमक मंडी रविवारीय धर्मसभा में मुनिश्री पूज्य सागर महाराज ने कहा

नवभारत न्यूज

सागर 2 दिसंबर. मुनिश्री पूज्य सागर महाराज ने कहा कि जिंदगी आसान नहीं है, बनाना पड़ता है, कभी नजरअंदाज करके और कभी बर्दाश्त करके।

उक्त उदगार मुनिश्री ने आज कटरा नमक मंडी स्थित गौराबाई दिगंबर जैन मंदिर में आयोजित रविवारीय धर्मसभा में कहे। संत शिरोमणि जैनाचार्य विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनिश्री योग सागर महाराज एवं मुनिश्री अभय सागर महाराज संसघ सानिध्य में शनिवार को गोपालगंज से विहार कर कटरा नमक मंडी स्थित गौराबाई दिगंबर जैन मंदिर पहुंचे। जहां पर तीनों मंदिरों के ट्रस्ट कमेटियों के सदस्यों द्वारा मुनिसंघ की आगवानी की गई थी। सायकाल गुरूभक्ति और रात्रि विश्राम के उपरांत आज रविवार की सुबह कटरा में धर्मसभा हुई। धर्मसभा के पूर्व सिद्धार्थ नंदन पाठशाला और संस्कार केंद्र के बच्चों द्वारा गुरू पूजन किया गया। धर्मसभा का संचालन अशोक पिडरूआ ने किया। चित्रों का अनावरण कटरा स्थित तीनों मंदिरों के ट्रस्ट कमेटी के सदस्यों द्वारा किया गया। धर्मसभा को मुनिश्री संभव सागर महाराज ने भी संबोधित करते हुए कहा कि आज मुनिश्री प्रभात सागर महाराज का अवतरण दिवस हैं। गिफ्ट-उपहार के रूप में धनतेरस के दिन ही खजुराहों में विराजमान आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ने सागर वासियों को पंचकल्याणक के स्वीकृति दे दी थी। धर्मसभा में महेश बिलहरा, डॉ जीवनलाल जैन, पंडित दामोदर दास शास्त्री, प्रेमचंद जैन, मुकेश जैन ढाना अशोक वीर, राजकुमार मिनी, मनीष नायक, अनिल मलैया, कैलाश सिंघई, चक्रेश सिंघई, विनोद ताजपुर, डॉ संदीप जैन, देवेंद्र जैना, तरूण कोयला, सौरभ सिंघई, सुरेंद्र खुर्दलिया, देवेंद्र लुहारी, डॉ राजेश जैन, डॉ मधुर जैन, रमेशचंद जैन, दिनेश सिंघई, श्रीमति रश्मि जैन ऋतु, श्रीमति किरण जैन, ऋषभ मड़ावरा, डॉ विजय जैन, राजेंद्र कुमार जैन सहित बड़ी संख्या में श्रृद्धालु उपस्थित थे।

Scanned by CamScanner

पत्रिका . सागर, सोमवार, 03 दिसंबर, 2018

67 मुनि, आर्यिकाओं के सानिध्य में होगा पंचकल्याण

सागर. भाग्योदय तीर्थ परिसर में 8 से 14 दिसम्बर तक होने वाले पंचकल्याण समारोह की तैयारियां शुरू हो गई हैं। मुनि योगसागर महाराज के ससंघ सानिध्य में होने वाले इस महोत्सव में 4 मुनिसंघ और 6 आर्यिका संघ की उपस्थिति रहेगी। कुल 67 मुनि और आर्यिकाओं की उपस्थिति रहेगी। मुनि सेवा समिति के सदस्य मुकेश जैन ने बताया कि मुनिश्री योगसागर महाराज और मुनिश्री अभयसागर महाराज सागर में विराजमान हैं।

इसके अलावा खुरई में विराजमान मुनिश्री पवित्र सागर, प्रयोग सागर महाराज और गौरझामर में विराजमान मुनिश्री विमल सागर महाराज ससंघ सागर की ओर विहार कर पहुंचेंगे। पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव के प्रतिष्ठाचार्य ब्रह्मचारी विनय भैया बंडा होंगे। इसके लिए भाग्योदय में तैयारी शुरू हो गई हैं। अनिल नैनधरा ने बताया कि भाग्योदय परिसर में होने वाले पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव के प्रमुख पात्रों का चयन मुनि श्री योगसागर महाराज के ससंघ सानिध्य में 4 दिसंबर मंगलवार को दोपहर 1.30 पर भाग्योदय में होगा।

Scanned by CamScanner

06 नवदुनिया
भोपाल, सोमवार 03 दिसंबर 2018

मुनिश्री निर्णयसागर, मुनिश्री पदमसागर ने किया पिच्छी परिवर्तन

शहर में निकली शोभायात्रा, उमड़ा जनसमूह

बीना। नवदुनिया न्यूज

शहर में चातुर्मास कर रहे आचार्य विद्यासागर महाराज के शिष्य मुनिश्री निर्णयसागर व मुनिश्री पदमसागर महाराज ने रविवार को पिच्छी परिवर्तन किया। पिच्छिका परिवर्तन के पहले शहर में विषाल शोभायात्रा निकली, जिसमें उत्साह से सकल दिगंबर जैन समाज ने भाग लिया।

रविवार को जैन समाज द्वारा पिच्छिका परिवर्तन समारोह का आयोजन किया गया। इसके लिए इटावा स्थित श्रीनाभिनंदन दिगंबर जैन मंदिर से शोभायात्रा निकाली गई। यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु महिला, पुरुष शामिल हुए। मुनिश्री निर्णयसागर व मुनिश्री पदमसागर महाराज के सानिध्य में शोभायात्रा इटावा से निकलकर सर्वोदय चौराहा, कॉलेज तिराहा, गांधी तिराहा, महावीर चौक, कच्चा रोड होते हुए जैन शिक्षा केंद्र दयोदय गौशाला परिसर पहुंची। यहां पिच्छिका परिवर्तन समारोह हुआ। मुनिश्री निर्णयसागर महाराज की पिच्छी मोनू जैन को प्राप्त हुई व मुनिश्री पदमसागर की पिच्छी अरविंद जैन जयंती जैन को मिली। मुनिश्री निर्णयसागर को पिच्छी संदीप जैन ने प्रदान की तथा मुनिश्री पदमसागर महाराज को पिच्छी राजेंद्र जैन बंटी ने दी।

बीना। पिच्छिका परिवर्तन समारोह में उपस्थित जनसमुदाय।

जीवों को बचाने का काम करते हैं

दयोदय गौशाला परिसर में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री निर्णयसागर महाराज ने कहा कि पिच्छी वह उपकरण है जिससे अनेक जीवों को बचाने का काम मुनि करते हैं। यह बहुत ही मुलायम होता है और इससे किसी जीव की हिंसा नहीं होती। यह अहिंसा का बहुत बड़ा साधन है।

Scanned by CamScanner

गौरझामर से भाग्योदय तीर्थ सागर के लिए मुनिसंघ ने किया विहार

गौरझामर। नवदुनिया न्यूज

श्रीपारसनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर में विराजमान मुनिश्री विमलसागर महाराज, मुनिश्री अनंतसागर महराज, मुनिश्री धर्मसागर महाराज, मुनिश्री अचलसागर महाराज, मुनिश्री अतुलसागर महाराज, मुनिश्री भावसागर महाराज का रविवार को गौरझामर से विहार हो गया।

सागर में आयोजित होने वाले पंचकल्याणक महोत्सव में आचार्यश्री विद्यासागर महाराज के पधारने की संभावना के चलते मुनिसंघ ने सागर की ओर विहार किया है। सागर में यह पंचकल्याणक महोत्सव 8 से 13 दिसंबर तक होगा। इस समारोह में अनेक मुनि एवं आर्यिका संघ शामिल हो रहे हैं। मुनिसंघ के विहार के समय नगर में श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। सभी ने अपने अपने घर पर मुनिसंघ का पाद प्रक्षालन व आरती की। मुनिसंघ 4 दिसंबर को प्रात? काल भाग्योदय तीर्थ पहुंचेंगे। जहां पंचकल्याणक महोत्सव के पात्रों का चयन होगा। वहां पर मुनिश्री योगसागर महाराज ससंघ, मुनिश्री अभयसागर महाराज ससंघ विराजमान हैं। गौरझामर से विहार करने के बाद सुरखी में आर्यिकाश्री पवित्रमति माताजी ससंघ ने मुनि संघ की अगवानी की। गौरझामर में मुनिसंघ का आगमन 15 जुलाई को हुआ था।

Scanned by CamScanner

इटावा जैन मंदिर में विराजमान मुनिश्री निर्णयसागर, मुनिश्री पद्मसागर महाराज का हुआ विहार

बीना | इटावा जैन मंदिर में चातुर्मास के समापन एवं पिच्छिका परिवर्तन समारोह के बाद मुनिश्री निर्णयसागर महाराज एवं मुनिश्री पद्मसागर महाराज का विहार मुंगावली की ओर हो गया है। विहार के पूर्व मुनि संघ ने नगरवासियों को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। मुनि संघ ने रात्रि विश्राम बमोरी गांव में कर, मंगलवार को आहारचर्या निठर ग्राम में की। वहां से विहार कर मुनि संघ मुंगावली के समीप पहुंचा। शाम 5 बजे ललितपुर से विहार कर आएं गोपाल ग्राम आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज ससंघ भव्य अगवानी श्रद्धालुओं ने गाजे-बाजों के साथ की। मुनिश्री निर्णयसागर महाराज, मुनिश्री पद्मसागर महाराज ने आचार्यश्री के चरण छूकर आशीर्वाद लिया। मुनि संघ को विहार कराने वालों में बीना से बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल थे।

मुनिसंघ ने विहार करने से पहले प्रेम एवं आपसी भाई-चारा पर प्रवचन दिए। कहा कि प्रेम का अर्थ है बुराई को भलाई से जीतना। हमारी सभ्यता के अस्तित्व के लिए यह जरूरी है। इसे पाने के लिए पहले अपने को समझना होगा। क्योंकि निश्चित ही आप खुद से ही उतने ही अनजान होंगे, जितने अपने दुश्मन से। कोई आपको पसंद नहीं करता या आपकी आलोचना करता है तो क्यों? कुछ कमी होगी। अतीत में कोई भूल की होगी। ऐसे कई कारण हो सकते हैं, जिन्हें आप नहीं देख पा रहे होंगे। इसलिए सबसे पहले अपने अंदर झांको। जब कोई व्यक्ति यह समझ लेता है तो उसका नजरिया ही बदल जाता है। संसार का ढांचा, प्रेम की मजबूत नींव पर खड़ा होता है। प्रेम के विदा होते ही संसार को गलने में भला क्या देरी होगी। जीवन का अस्तित्व एवं मानवता की नींव प्रेम से ही सशक्त होती है।

Scanned by CamScanner

आचार्यश्री से मुनि दीक्षा लेकर वैराग्य पथ पर चले पथरिया के मोनू भैया, अब कहलाएंगे मुनिश्री निरालस सागर

दैनिक भास्कर, सागर, सोमवार, 3 दिसंबर, 2018

भास्कर संवाददाता | पथरिया

शहर के एक युवक ने माता-पिता के संस्कारों से प्रेरित होकर मुनिदीक्षा ली। 28 नवंबर को ललितपुर में आचार्यश्री विद्यासागर महाराज के सानिध्य में मुनि दीक्षा लेकर अपना जीवन वैराग्य पथ पर चलने के लिए समर्पित कर दिया।

केरबना परिवार में जन्में ब्रम्हचारी दीपेंद्र उर्फ मोनू भैया बचपन से ही माता-पिता के संस्कारों के चलते धार्मिक प्रवृत्ति की ओर अग्रसर रहे। पथरिया के सरस्वती शिशु मंदिर में कक्षा आठवीं उत्तीर्ण की। इसके बाद भोपाल के शारदा विहार बोर्डिंग स्कूल में बारहवीं तक की पढ़ाई की। इसके बाद पुनः पथरिया आ गए। बारहवीं के बाद दमोह के ओजस्विनी कॉलेज से बीकॉम तक पढ़ाई की। परिवार में चार भाई व एक बहन हैं। अपने माता-पिता की प्रेरणा के चलते वर्ष 2003 में पथरिया में मुनिश्री अजित सागर महाराज के चातुर्मास के दौरान से साधु सेवा में लग गए। इसके बार वर्ष 2015 में बीना बराह में आचार्यश्री विद्यासागर महाराज के सानिध्य में आजीवन ब्रम्हचार्य व्रत धारण किया। तभी से गुरू आज्ञा से वह मुनि श्रेष्ठ समय सागर महाराज के ससंघ में रहकर धार्मिक शिक्षा ग्रहण की। हाल ही में ललितपुर में आचार्यश्री विद्यासागर के सानिध्य में 28 नवंबर को मुनिश्री की दीक्षा ली जिसके बाद अब इनका नाम मुनिश्री निरालस सागर जी महाराज रखा गया है। अब यह इसी नाम से जाने जाएंगे।

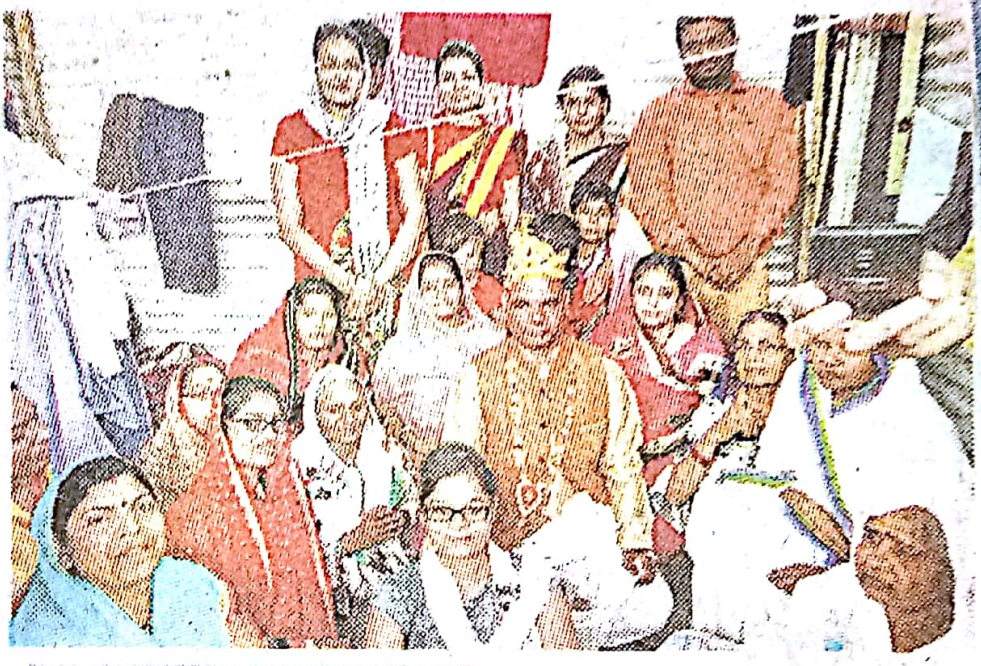

आचार्यश्री विद्यासागर महाराज से दीक्षा लेने के पूर्व परिजनों के साथ मोनू भैया।

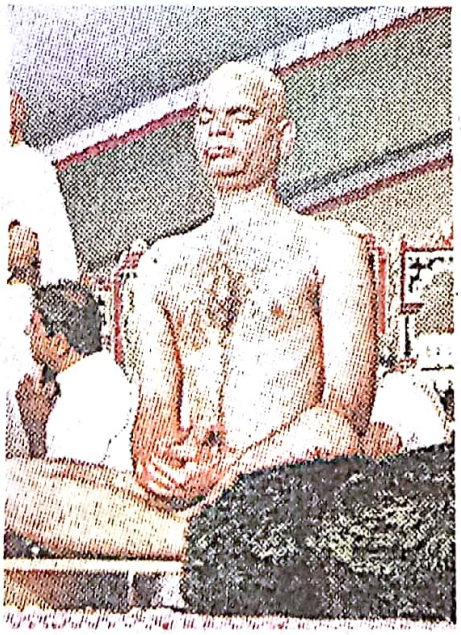

परिजनों ने बताया- मेडिकल स्टोर चलाया और खेती भी की : परिजनों ने बताया कि मोनू भैया ने पढ़ाई के साथ-साथ अपने पैतृक कृषि में भी हाथ बंटाने गांव पहुंच जाते थे। इसके अलावा पथरिया नगर में स्वयं के मेडीकल स्टोर्स में बैठकर व्यवसाय के साथ धर्म कर्म का पठन पाठन करते रहते थे। इससे पहले उन्होंने ब्रम्चारी व्रत की दीक्षा 2015 में ली थी। परिजनों ने बताया कि मोनू भैया की बहन कल्पना दीदी भी करीब 15 साल पहले ब्रम्हचार्य व्रत ले चुकी हैं। जो वर्तमान में जबलपुर प्रतिभा मंडल में हैं।

Scanned by CamScanner

पेड़ की डाली से किया नगर का नामकरण घौरा ,लेकिन अब हो गया घुवारा

राजाराम साहू

घुवारा,02 दिसम्बर। महाराजा कीरत सिंह जू देव के पूर्वज सन 1400 में राजस्थान प्रान्त के तत्कालीन राज्य धसाड़ क्षेत्र के जंगलों से आखेट करने के लिए इस बीर भूमि पर आए । नगर घुवारा के बीचों बीच पहाड़ी पर किला बना हुया है।

वीर भूमि घुवारा का पुराना इतिहास

उसी पहाड़ी पर उस समय विशाल दुर्गम बन था महाराजा कीरत सिंह जू देव के पूर्वज राव उद्देत सिंह जू देव अपनी फौज के शिकारी कुत्तों के साथ जब इस पहाड़ी पर पहुचे तो एक खरगोश ने महाराज उद्देत सिंह के शिकारी कुत्तों को बुरी तरह खदेड़ दिया। पूरी घटना का नजारा महाराज राव उद्देत सिंह जू देव देख रहे थे महाराज राव ने तत्काल उसी स्थान पर अपने प्रमुख सलाहकार मंत्रियो की बैठक ली महाराज एंव मंत्री मंडल ने निर्णय लिया कि जिस बीर भूमि के खरगोश ने अपने शिकारी कुत्तों को बुरी तरह खदेड़ा है वह भूमि बीर भूमि है और यदि इस बीर भूमि पर महाराजा किला बना कर स्वंम निवास करेंगे तो महाराज की भविष्य की पीड़िया बीर पुरुष तथा अजेय राज्य स्थापित करेंगे यह निर्णय ले लिया गया ।

मंत्री मंडल के उक्त निर्णय से सहमत होकर महाराज राव उद्देत सिंह जू देव ने उसी बीर भूमि पर लगे पेड़ से एक डाली ली और डाली को रख कर उसी पहाड़ी को चिन्हित कर दिया ।सन 1400 में ही महाराजा राव उद्देत सिंह जू देव ने चिन्हित पहाड़ी पर किला निर्मित करने की आदर शिला रखी और महाराजा ने इस नगर का नाम घोरा रख दिया था घोरा को स्वतंत्र राज्य स्थापित किया गया। राजघराने के साथ उड़ीसा जगन्नाथपुरी से भगवान जगदीश स्वामी जी को पालकी में बिठा कर अपने नगर घुवारा तक पदयात्रा करके लाये थे जहा जगदीश स्वामी भगवान को जिसमे सयंम भगवान कृष्ण बहिन सहुद्रा बड़े भाई बलदाऊ जी को स्थापित किया गया। साथ ही बड़े ही शोभायमान बेड को तैयार कराया गया जो भीषण गर्मी में भी खाली नही होती हर समय पानी लबालब रहता है। सन 1727 में नबाब बंगस ने बुन्देलखण्ड पर आक्रमण किया था उस समय महाराजा छत्रसाल ने नबाब बंगस को बुन्देलखण्ड में प्रवेश करने से रोकने के लिए लड़ाइयां शुरू की महाराजा छत्रसाल ने नबाब बंगस की शक्ति को देखते हुए घुवारा राज्य के महाराजा कीरतसिंह जू देव को नबाब बंगस के साथ युद्ध के लिए शामिल होने के लिए सन्देश दिया। उस समय महाराजा कीरतसिंह जू देव की 45 बर्ष की उम्र के थे उन्होंने बुन्देलखण्ड की आन बान शान को बनाये रखने के लिए अपनी चतुरंगिनी सेना को लेकर महाराज छत्रसाल के साथ नबाब बंगस से घनघोर युद्ध किया। महाराजा कीरतसिंह जू देव नबाब बंगस के साथ घनघोर युद्ध करते हुए दिनांक 19/4/1728 को लड़ते लड़ते शहीद हो गए।

जगनन्नाथपुरी मंदिर से आये जगदीश स्वामी भगवान

महाराजा कीरत सिंह जू देव का जन्म 11 दिसम्बर 1683में महाराज राव उद्देत सिंह जू देव के राजपरिवार नगर घुवारा में हुया था ।महाराजा कीरतसिंह जू देव ने अपनी बीस बर्ष की अल्फ आयु में अपने समूचे राज्य की चतुर्थ सीमाओं का विस्तार कर ओरछा राज्य की सीमाओं तक निर्माण कराया , नगर में सात तालाब बनवाये , जैन धर्म से प्रेरित होकर किला के अंदर रंग महलों के पीछे बाले चोक में पार्श्वनाथ भगवान की आकृति का मान स्तंभ स्थापित कराया, द्रोणगिरी सेदपा के जगलों में जैन धर्म के विकाश के लिए तथा अहिंसा का मार्ग जनता में प्रसस्त करने के लिए अनेक कार्य किये उसी दौरान गोंड़ जाति गायों से हल जोतती थी उस पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया। उक्त कार्य पूर्ण करा कर महाराज के मन मे एक अलग अलख जगी और महाराज ने द्रंण संकल्प ले लिया कि उड़ीसा जगनन्नाथ जी से भगवान की प्रतिमा को अपनी नगरी में स्थापित करवाना है।

नव भारत भोपाल, सोमवार, 3 दिसंबर 2018

Scanned by CamScanner

हनुमानजी का धार्मिक ग्रंथों में कई बार वर्णन : निर्भयसागरजी

भोपाल। देश भर में भगवान हनुमान की जाति को लेकर बहस छिड़ी हुई है। कोई उन्हें दलित बता रहा है तो कोई आदिवासी। ऐसे में मध्यप्रदेश के एक जैन मुनि ने अब ये कहा है कि हनुमान जैन थे। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से करीब 25 किलोमीटर दूर समसगड़ के एक जैन मंदिर में आचार्य निर्भय सागर महाराज ने कहा कि जैन धर्म मे ऐसे कई संस्मरणों का जिक्र है जिससे ये साबित होता है कि हनुमान जैन धर्म से थे। आचार्य निर्भयसागर महाराज के मुताबिक जैन दर्शन के अनुसार हनुमान कामदेव थे। जैन धर्म में 24 कामदेव होते हैं। जैन दर्शन के अनुसार चक्रवर्ती, नारायण, प्रति नारायण, बलदेव, वासुदेव, कामदेव और तीर्थंकर के माता पिता ये सभी क्षत्रिय हुआ करते हैं। आचार्य निर्भय सागर ने बताया कि इनकी संख्या 169 हुआ करती है जो कि महापुरुष होते हैं और इन महापुरुषों में हनुमान का भी नाम है और कामदेव होने के नाते ये क्षत्रिय थे।

इसके आगे आचार्य निर्भय सागर महाराज बताते हैं कि जैन दर्शन के अनुसार हनुमान पहले क्षत्रिय थे और उन्होंने वैराग्य की अवस्था को धारण किया इसके बाद जंगलों में जाने के बाद हनुमान ने दीक्षा ली। आचार्य निर्भय सागर ने आगे हनुमान को जैन साबित करने के लिए कई तर्क दिए। उन्होंने कहा कि ज्ञान के ऊपर अज्ञान का जो पर्दा होता है हनुमान ने उस पर्दे को हटाया। उन्होंने कहा कि हनुमान ने वैराग्य को धारण किया और कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति की। निर्भयसागर के मुताबिक हनुमान ने जब क्षत्रिय के बाद वैराग्य अवस्था को धारण कर के वीतराग अवस्था को प्राप्त किया फिर अरिहंत अवस्था हासिल की तब से वे जैन दर्शन के अनुसार अरिहंत बने। निर्भय सागर ने कहा कि जैन धर्म में जो 24 पुराण हैं, महापुरुषों के ग्रन्थ हैं उनमें हनुमान का बहुत वर्णन है। उन्होंने कहा कि जैन धर्म के अहिंसा पद्धति को शुरू से ही उन्होंने स्वीकार किया इसलिए उन्होंने हिंसक युद्ध नही किया, इसलिए इससे ये साबित होता है कि हनुमान जैन थे क्योंकि जैन कोई जाति नही जैन एक धर्म है।

आचरण सागर, 3 दिसम्बर 2018

Scanned by CamScanner

देश में जैन की जनसंख्या का सही आंकड़ा लाने समाज कर रहा जनगणना

ग्वालियर। अल्पसंख्यक का दर्जा प्राप्त जैन समाज को अब जनगणना में आंकी गई अपनी जनसंख्या बेहद कम नजर आ रही है। भारतवर्ष में हुई जनगणना में जैन समाज की जनसंख्या देशभर में महज 46 लाख बताई गई है, जबकि जैन समाज का कहना है कि उनकी संख्या दो करोड़ से भी अधिक है। समाज की जनसंख्या का सही आंकड़ा देश के सामने लाने के लिए आचार्य विद्यासागर महाराज के शिष्य मुनिश्री प्रमाण सागर ने देशभर में जैन मंदिरों में गणना करने के लिए कहा है। इसके तहत पूरे देशभर में जैन समाज के लोगों की जनगणना हो रही है। इसमें जो आंकड़े सामने आएंगे उसे सरकार को दिया जाएगा।

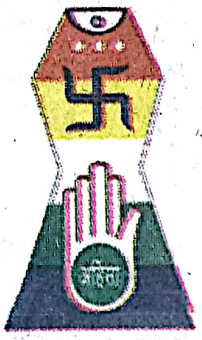

ग्वालियर में जैन समाज की जनगणना का कार्य संभाल रहे नया बाजार जैन मंदिर, थाटीपुर जैन मंदिर के समन्वयक डॉ. वीकेडी जैन और दिगम्बर जैन तेरहापंथी व खण्डेलवाल तेरहापंथी जैन मंदिर के समन्वयक मंयक पाण्डेया ने बताया कि देश में हुई जनगणना में हमारे समाज की संख्या को बहुत कम बताया गया है। इसका प्रमुख कारण है कि समाज के लोगों ने जनगणना के दौरान सरनेम के बजाय अपने गोत्र लिख दिए, साथ ही उन्होंने जैन पर निशान न लगाते हुए हिन्दू के चि- पर निशान लगा दिया। इसलिए देश के सामने सही जनसंख्या का आंकड़ा लाने के लिए मुनिश्री प्रमाण सागर महाराज ने जनगणना कराना का आदेश दिया है। इसके तहत देशभर के सभी जैन मंदिरों पर जनसंख्या फॉर्म रखे गए हैं। मंदिरों पर आने वाले श्रद्धालु इन फॉर्म को अपने साथ ले जाते हैं और इसके बाद इन्हें भरकर मंदिरों के समन्वयक आदि के पास जमा कर देते हैं। इस फॉर्म में पूरे परिवार की जानकारी भरी जाती है।

दिगम्बर-श्वेताम्बर सभी भर रहे फॉर्म

- जनगणना वाले इस फॉर्म को दिगम्बर और श्वेताम्बर समाज के सभी लोग भर रहे हैं। इससे जैन समाज का पूरा डाटा देश के सामने आ जाएगा।
- श्वेताम्बर में साधु-संत वस्त्र पहनते हैं, जबकि दिगम्बर में साधु-संत वस्त्र नहीं पहनते हैं।
- दिगम्बर और श्वेताम्बर एक ही भगवान को मानते हैं, पर दिगम्बर में भगवान का श्रृंगार नहीं किया जाता न फूल चड़ाए जाते।
- दिगम्बर संत एक समय भोजन करते हैं, जबकि श्वेताम्बर सुबह नाश्ता, दोपहर और शाम को भोजन करते हैं।
- दिगम्बर संत मोर पंखों की पिच्छी लेकर चलते हैं, जबकि श्वेताम्बर संत धागों की पिच्छी लेकर चलते हैं।

फॉर्म में भरनी है पूरी जानकारी

- फॉर्म में जैन समाज के लोगों को पूरी जानकारी भरनी है। इसमें नाम, सरनेम सहित, पता, गोत्र, परिवार संख्या, आयु, व्यवसाय, मोबाइल नंबर आदि सहित अनेक जानकारी भरकर देना है।

सरनेम में नहीं लिखते हैं जैन

- जैन समाज के कई लोग अपने नाम में सरनेम के स्थान पर जैन लिखने के बजाय गोत्र का नाम लिख देते हैं। इससे उनकी पहचान नहीं हो पाती। कोई गंगवाल लिखता है तो कोई कुछ और, इससे समाजबंधुओं की सही गणना नहीं हो पाती।
- मुनिश्री प्रमाण सागर महाराज के आदेशानुसार देशभर में जैन समाज की जनगणना का कार्य चल रहा है। ग्वालियर में अभी तक 2 हजार से अधिक फॉर्म वापस आ चुके हैं। हमारी जनसंख्या लगभग दो करोड़ से अधिक है, लेकिन गलत आंकड़ों के कारण सिर्फ 46 लाख बताई जाती है। डॉ. व्हीकेडी जैन, समन्वयक, जैन मंदिर थाटीपुर

सागर, 3 दिसम्बर 2018

Scanned by CamScanner

सांसारिक मोह को त्यागकर साध्वी बन रहीं 2 लड़कियां, 9 को लेंगी जैन धर्म की दीक्षा

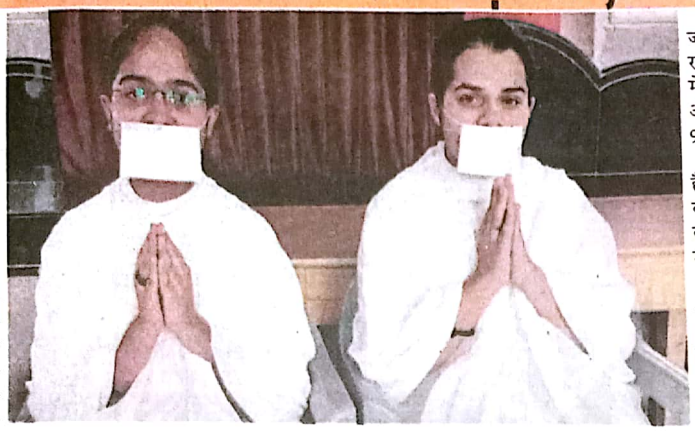

मुम्बई। जिस उम्र में लोग कॅरियर चुनते हैं, महंगे इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स व सोशल मीडिया में मशगूल रहते हैं या फिर सैर सपाटे में रमे रहते हैं, उस उम्र में गुजरात के राजकोट की रहने वाली दो लड़कियां सांसारिक मोह त्यागकर जैन धर्म की दीक्षा लेने जा रही हैं। 24 वर्षीय उपासना संजयभाई शेठ और 17 वर्षीय आराधना मनोजभाई डेलीवाला 9 दिसंबर को राजकोट में जैन धर्म की दीक्षा ग्रहण करेंगी। इस दीक्षा ग्रहण कार्यक्रम में हजारों की तादाद में जैन समुदाय के लोग इकट्ठा होंगे। उपासना शेठ के पिता संजयभाई सेठ फाउंड्री और स्टील बिजनेस से जुड़े हैं। करोड़पति पिता की बेटी उपासना ने ग्रेजुएट तक की पढ़ाई की है। साथ ही उनकी बिजनेस मैनेजमेंट में भी काफी दिलचस्पी है। उपासना करीब 35 देशों के 54 शहरों की सैर कर चुकी हैं। पहले उनको आईफोन, कार, टैबलेट और ब्रांडेड कपड़े समेत अन्य चीजों का बहुत शौक था और वो खूब इनका इस्तेमाल करती थीं। इसके लिए वो हर महीने एक लाख रुपये से ज्यादा खर्च भी करती थीं। उनकी यह वैभवी जिंदगी तबसे अचानक बदल गई, जबसे वो अपने गुरुदेव के शिविर में जाने लगीं। अब उनका जीवन पूरी तरह बदल चुका है। वो ब्रांडेड कपड़े और वस्तुओं को छोड़कर कर्म के बैलेंस शीट का हिसाब लगाने लगी हैं। उपासना आत्म शुद्धि के लिए जैन धर्म की दीक्षा लेकर संयम का मार्ग अपनाने जा रही हैं। इसी मार्ग पर उपासना के साथ आराधना भी निकलने जा रही हैं। आराधना डेलीवाला के पिता मनोजभाई डेलीवाला राजकोट में गिफ्ट शॉप चलाते हैं। आराधना ने 10वीं तक की पढ़ाई की है। आराधना पढ़ाई में अच्छी थी। उन्होंने 10वीं में गुजरात बोर्ड में 99.94 फीसदी अंक हासिल किए थे और छठे स्थान पर रही हैं।

आराधना धार्मिक वातावरण में ही पली बढ़ी हैं। उनका कहना है कि जब वो अपने मां के गर्भ में थीं, तभी से उनको गुरुवाणी सुनने को मिल रही है। बचपन में उनके पिता उनको साधु वंदना सुनाया करते थे। जैन पाठशाला में वो पढ़ाई भी कर चुकी हैं। बचपन से ही उनमें धार्मिक संस्कार पड़ गए थे।

साल 2015 में उन्होंने गुरुजी के शिविर में जाना शुरू कर दिया और अचानक उनके जीवन में परिवर्तन आ गया। अब आराधना ने अपने माता-पिता की आज्ञा लेकर जैन धर्म की दीक्षा लेने का निर्णय किया है। आराधना और उपासना जिन नम्रमुनि महाराज से दीक्षा ले रही हैं, उनका कहना है कि जब किसी आत्मा को शक्ति की प्राप्ति होती है, तब वो संयम की राह पर चल पड़ती है। जब किसी आत्मा को संयम की राह पर जाना होता है, तब वो गुरु के द्वारा दीक्षा लेती है। राजकोट में ऐसी ही दो लड़कियां संयम की राह पर 9 दिसंबर को दीक्षा प्राप्त करेगी और सांसारिक जीवन को त्यागकर आत्म कार्य के मार्ग पर चल पड़ेंगी।

प्रकाशक एवं मुद्रक - सुनील जैन द्वारा स्वत्वाधिकारी आचरण प्रिन्टर्स प्रा. लि. ग्वालियर (म . प्र .) के लिए पायोनियर प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्राइवेट लिमिटेड रेल्वे स्टेशन रोड, सागर (मध्यप्रदेश) से मुद्रित एवं प्रक
स्थानीय संपादक-सुदेश तिवारी (समाचार चयन के लिए पी आर बी एक्ट के तहत जिम्मेदार) फोन-247692, 238412 फैक्स - (07582) 247822 ई-मेल : aacharan_sagar@yahoo.com डाक रजि.

आचरण सागर, 03 दिसम्बर २०१८

Scanned by CamScanner

पिच्छिका परिवर्तन समारोह; पिच्छिका लेकर आया हाथी बना आकर्षण का केंद्र

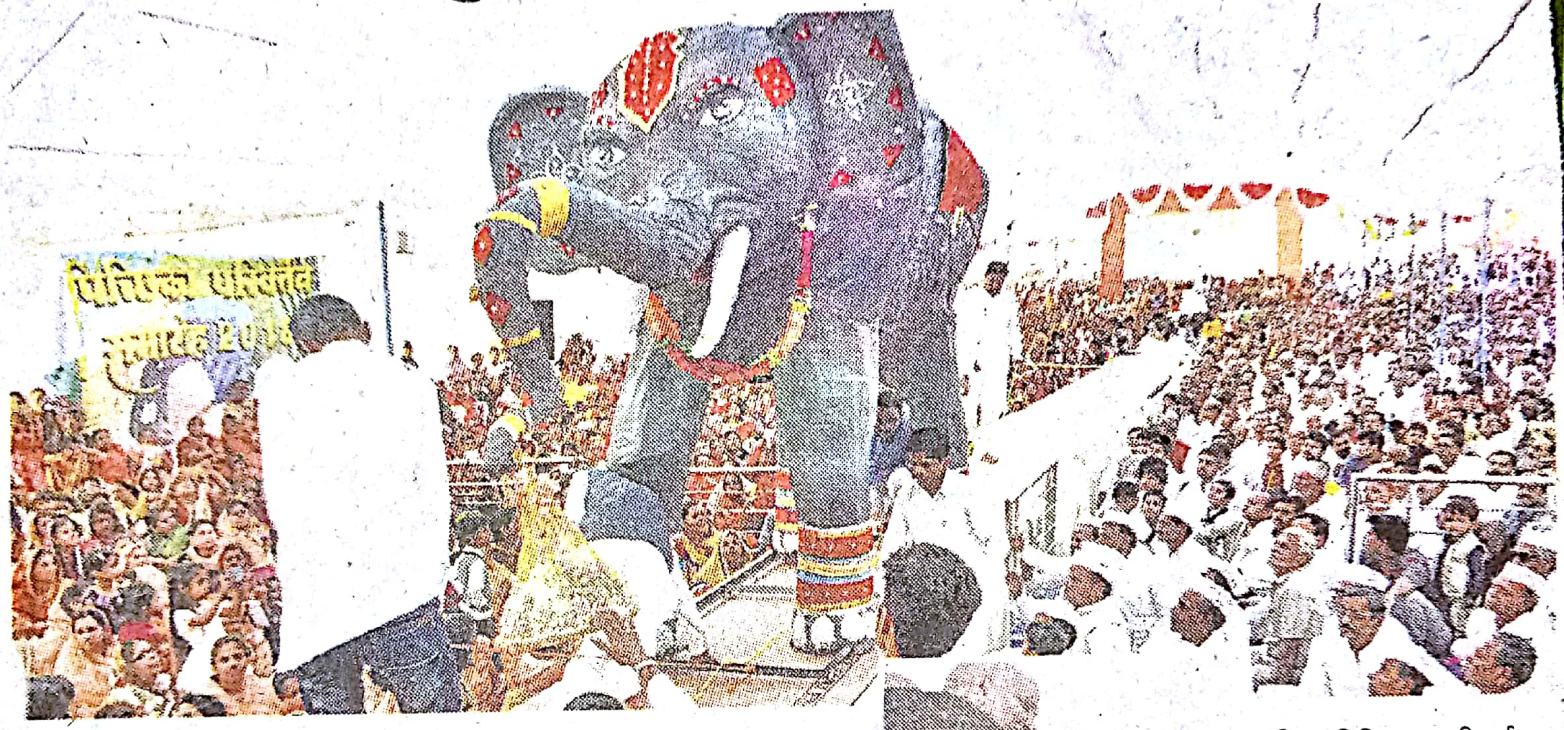

भास्कर संवाददाता | बीना

इटावा जैन मंदिर में विराजमान मुनिश्री निर्णय सागर महाराज व मुनिश्री पद्मसागर महाराज का पिच्छिका परिवर्तन समारोह रविवार को ब्र. अविनाश भैया के मार्गदर्शन में दयोदय गौशाला परिसर जैन स्कूल में संपन्न हुआ। जिसमें मुनिश्री निर्णय सागर की पिच्छी मोनू जैन व मुनिश्री पदम सागर की पिच्छी अरविंद कुमार जैन को प्राप्त हुई। जबकि मुनिद्वय को पिच्छी संदीप कुमार व राजेंद्र कुमार जैन ने दी।

पिच्छिका परिवर्तन समारोह के पहले मुनिसंघ के सानिध्य में सुबह 7 बजे अभिषेक, शांतिधारा। आचार्य श्री विद्यासागर महाराज का संगीतमय पूजन हुआ। सुबह 9 बजे मुनिश्री के प्रवचन हुए। फिर आहारचर्या के बाद दोपहर एक बजे से मुनिसंघ के सानिध्य में इटावा जैन मंदिर से नवीन पिच्छिकाओं एवं चातुर्मास कलशों की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। जो इटावा से होकर पुलिस थाना से होते हुए कच्चा रोड होकर जैन स्कूल पहुंची। यहां विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए और पिच्छिका लेने-देने वालों का सम्मान किया गया।

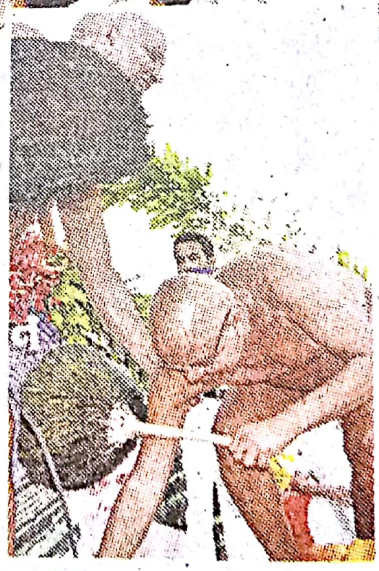

बीना। पिच्छिका परिवर्तन समारोह में मुनिश्री निर्णय सागर महाराज ने मुनिश्री पदम सागर महाराज की पुरानी पिच्छी के लेकर उन्हें नई पिच्छी भेंट की। पिच्छिका बदलने के बाद मुनिश्री पदम सागर महाराज ने मुनिश्री निर्णय सागर महाराज को दंडवत प्रणाम किया। फोटो-प्रमोद सैनी

दैनिक भास्कर, सागर, सोमवार, 03 दिसंबर, 2018

Scanned by CamScanner

आचार्य श्री विद्यासागर जी ने दी मुनि दीक्षा, नितेंद्र अब मुनि श्री 108 निराश्रव सागर के नाम से जाने जाएंगे

आचरण संवाददाता

नरसिंहपुर । स्थानीय निवासी नितेंद्र जैन अब मुनि श्री 108 निराश्रव सागर के नाम से जाने जाएंगे विगत दिवस उत्तर प्रदेश के ललितपुर में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने उन्हें मुनि दीक्षा देकर नितेंद्र जैन की जगह अब निराश्रव सागर मुनि के नाम से नामांकित किया नितेंद्र जैन का जन्म नरसिंहपुर में 28 अप्रैल 1981 को एक जैन परिवार में हुआ था पिता तुलसीराम जैन माता प्रेमलता जैन के यहां पुत्र के रूप में जन्म लेने पर परिवार में बड़ी ही खुशियां का आगमन हुआ था बाल्यकाल से ही सरल स्वभाव मिलनसार एवं धर्म प्रेमी होने के कारण उनकी धार्मिक आस्था बढ़ती गई।

आज मुनि श्री निराश्रव सागर की उपाधि से नवाजे गए नितेंद्र बचपन से ही खेलकूद और शिक्षा में निपुण रहे उनकी प्राथमिक शिक्षा नरसिंहपुर में ही संपन्न हुई एवं स्नातक व स्नातकोत्तर की शिक्षाएं भी स्थानीय पीजी कॉलेज नरसिंहपुर में ही की बचपन से ही धर्म के संस्कार मिलते रहे पिता श्री टीआर जैन शासकीय विभाग में वरिष्ठ लेखाकार के पद पर रहे और सरल एवं शांत स्वभाव के हैं और माता श्रीमती प्रेमलता देवी अत्यंत धार्मिक एवं व्रतधारी महिला हैं इसलिए नितेंद्र भी सरल शांत एवं धार्मिक व्यक्ति रहे पर उनकी जीवन में एक घटना ने उन्हें और उनके परिवार को झकझोर दिया जिससे उनके जीवन में नया बदलाव आया सन 2005 में उन्हें एक बीमारी का नागपुर में इलाज कराने पर पता चला है उन्हें कैंसर है परिवार के लोगों ने निर्णय लिया कि मुंबई में इलाज कराएंगे वहां भी डॉक्टर ने उन्हें कैंसर बताया और इलाज प्रारंभ हुआ उन्हें कीमोथेरेपी दी गई उनके शरीर के पूरे बाल झड़ गए शांत स्वभाव के होने के कारण उन्होंने रोग की शांति से झेला उसी समय कंदेली दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य श्री विद्यासागर जी की परम शिष्या 105 आर्यिका श्री अनंत मति माताजी का चतुर्मास चल रहा था उनउपकारी माताजी ने अपनी दया दिखाते हुए आशीर्वाद दिया और उनसे कहा कि आप बीना बारहा सागर देवरी में आचार्य श्री विद्यासागर जी का चतुर्मास चल रहा है।

आप वहां जाकर उनसे मिले उनके दर्शन करें और वह सपरिवार उनके दर्शन करने गए तब आचार्य श्री जी ने कहा कि आप रात्रि में चारों प्रकार के आहार का त्याग करें यहां तक कि आज दवाई में भी शाम 7 बजे के पहले सेवन करें यह रात्रि भोजन त्याग करना ही औषधि है भैया जी इस नियम का पालन के साथ 5 साल के लिए ब्रह्मचर्य व्रत भी लिया और उन्होंने नियमों का दृढ़ता से पालन भी किया उसके बाद 8 नवंबर को उनका ऑपरेशन मुंबई में हुआ और ऑपरेशन में एक गांठ निकली उसकी जांच तो उसमें कैंसर का रोग निकला ही नहीं यह चमत्कार आचार्य श्री के आशीर्वाद से हुआ यह जीवन आचार्य श्री की ही देन है तो उन्होंने अपना जीवन आचार्य श्री विद्यासागर जी के चरणों में अर्पित कर दिया और दिगंबरी दीक्षा धारण कर ली और संयम के पथ को धारण कर नितेंद्र जैन से बन गए मुनि निराश्रव सागर 15 जुलाई 2015 को आचार्य श्री अजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लिया एवं 1 जुलाई 2016 को गृह त्याग कर मुनि श्री निराश्रव सागर जी सत्संग के सानिध्य में रहे बुधवार 28 नवंबर 2018 को ब्रह्मचारी नितेंद्र जैन को आचार्य श्री विद्यासागर जी ने मुनि की दीक्षा दी और उन्हें नया नाम मुनि निराश्रव सागर दिया गुरुवार को मुनि निराश्रव सागर के रूप में उनकी प्रथम आहार चर्या हुई।

नरसिंहपुर से सागर जी पहले मुनि है इसके पहले माता श्री 105 आर्यिका श्री अनंतमूर्ति माताजी एवं 105 आर्यिका श्री शाश्वतमति जी है जो आचार्य श्री की ही शिष्या है उनकी दीक्षा से समस्त नरसिंहपुर जैन समाज अत्यंत हर्ष है और मुनि आचार्य श्री और मुनि श्री के आगमन की प्रतीक्षा में है उक्त जानकारी जैन समाज के धर्मालंबी नितिन जैन द्वारा दी गई एवं समस्त जैन समाज में श्री नितेंद्र जैन को मुनि श्री बनने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की गई एवं समस्त समाज को उनके आगमन का इंतजार है और उन से निवेदन है कि वह आकर समाज के समस्त लोगों को कल्याण हेतु अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

आचरण । सागर ०३ दिसंबर २०१८

Scanned by CamScanner

'जिंदगी आसान नहीं, इसे आसान बनाना पड़ता है'

गर। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री।

सागर। इस दौरान प्रवचन सुनने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे।

दिगंबर जैन मंदिर में रविवारीय धर्मसभा का आयोजन

सागर। नवदुनिया प्रतिनिधि

कटरा नमक मंडी स्थित गौराबाई दिगंबर जैन मंदिर में रविवारीय धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री पूज्य सागर महाराज ने कहा जिंदगी आसान नहीं है, बनाना पड़ता है। कभी नजरअंदाज करके और कभी बर्दाश्त करके।

संत शिरोमणि जैनाचार्य विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनिश्री योग सागर महाराज एवं मुनिश्री अभय सागर महाराज संसघ सानिध्य में शनिवार को गोपालगंज से विहार कर कटरा नमक मंडी स्थित गौराबाई दिगंबर जैन मंदिर पहुंचे। यहां पर तीनों मंदिरों के ट्रस्ट कमेटियों के सदस्यों द्वारा मुनिसंघ की आगवानी की गई थी। सायकाल गुरूभक्ति और रात्रि विश्राम के उपरांत आज रविवार की सुबह कटरा में धर्मसभा हुई। धर्मसभा के पूर्व सिद्धार्थ नंदन पाठशाला और संस्कार केंद्र के बच्चों द्वारा गुरू पूजन किया गया। धर्मसभा का संचालन अशोक पिडरूआ ने किया। चित्रों का अनावरण कटरा स्थित तीनों मंदिरों के ट्रस्ट कमेटी के सदस्यों द्वारा किया गया। धर्मसभा को मुनिश्री संभव सागर महाराज ने भी संबोधित करते हुए कहा कि आज मुनिश्री प्रभात सागर महाराज का अवतरण दिवस है। गिफ्ट-उपहार के रूप में धनतेरस के दिन ही खजुराहो में विराजमान आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ने सागर वासियों को पंचकल्याणक के स्वीकृति दे दी थी। धर्मसभा में महेश बिलहरा, डॉ जीवनलाल जैन, पंडित दामोदर दास शास्त्री, प्रेमचंद जैन, मुकेश जैन ढाना अशोक वीर, राजकुमार मिनी, मनीष नायक, अनिल मलैया, कैलाश सिंघई, चक्रेश सिंघई उपस्थित थे।

भोपाल, सोमवार 03 दिसंबर 2018

Scanned by CamScanner

धर्मसभा

पत्रिका . सागर, सोमवार, 03 दिसंबर, 201
patrika.com

जिंदगी आसान नहीं, उसे बनाना पड़ता है : मुनिश्री

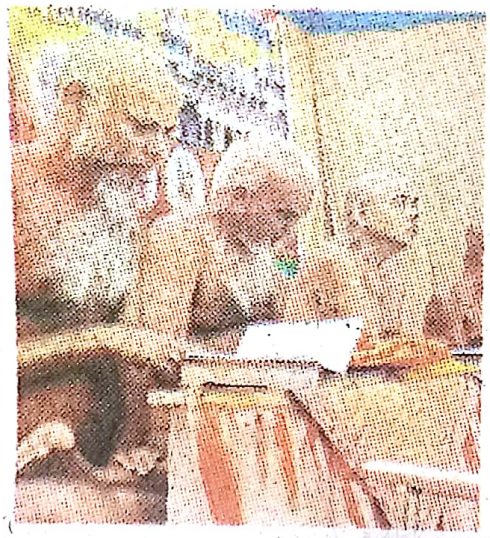

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

सागर. जिंदगी आसान नहीं है, इसे आसान बनाना पड़ता है। कभी नजरअंदाज करके और कभी बर्दाश्त करके। यह बात मुनिश्री सागर महाराज ने कटरा नमक मंडी स्थित गौराबाई दिगंबर जैन मंदिर में आयोजित रविवारीय धर्मसभा में कही। धर्मसभा के पूर्व सिद्धार्थ नंदन पाठशाला और संस्कार केंद्र के बच्चों द्वारा गुरु पूजन किया गया। संचालन अशोक पिडरूआ ने किया। चित्रों का अनावरण कटरा स्थित तीनों मंदिरों के ट्रस्ट कमेटी के सदस्यों द्वारा किया गया।

धर्मसभा में महेश बिलहरा,डॉ. जीवनलाल जैन, पंडित दामोदर दास शास्त्री, प्रेमचंद जैन, मुकेश जैन ढाना, अशोक वीर, राजकुमार मिनी, मनीष नायक,अनिल मलैया, कैलाश सिंघई, चक्रेश सिंघई, विनोद ताजपुर,डॉ. संदीप जैन,देवेंद्र जैना, तरूण कोयला, सौरभ सिंघई, सुरेंद्र खुर्दलिया,देवेंद्र लुहारी,डॉ.राजेश जैन, डॉ.मधुर जैन, रमेशचंद जैन, दिनेश सिंघई आदि मौजूद रहे।

Scanned by CamScanner

मोटिवेशन एवं कॅरियर कार्यक्रम

'अपने जीवन मे एक लक्ष्य निर्धारित करके आगे बढ़ो'

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

सागर. अंकुर कॉलोनी मकरोनिया में विराजमान बुंदेली संत मुनिश्री सुब्रतसागर महाराज के सानिध्य में मोटिवेशनल स्पीच एवं कॉरियर शिविर का आयोजन रविवार को युवा जैन मिलन मकरोनिया द्वारा किया गया। विद्या भवन में आयोजित इस कार्यक्रम में 100 से अधिक बच्चों ने भाग लिया।

युवा जैन मिलन के सांस्कृतिक मंत्री राहुल जैन हीरापुर ने शिविर की जानकारी बच्चों को दी। अंकित जैन और वैभव जैन द्वारा बच्चों द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब दिए गए। मुनिश्री सुव्रतसागर महाराज ने कार्यक्रम के दौरान बच्चों से कहा कि अपने जीवन में एक लक्ष्य निर्धारित करके आगे बढ़ना चाहिए। पढ़ाई के साथ-साथ अपने संस्कारों को भी ध्यान में रखे ,यही जीवन को सफलता की कुंजी है। कार्यक्रम में मुख्यअतिथि के रूप में भारतीय जैन मिलन क्षेत्र क्र.1 के संयुक्त मंत्री मनोज लालो, कार्यअध्यक्ष राकेश जैन, अरविंद जैन, संपत जैन ,प्रसन्न जैन, मृगेंद्र जैन, अंशुल जैन सहित युवा मिलन के सभी सदस्य मौजूद रहे।

पत्रिका .
सागर, सोमवार, 03 दिसंबर, 2018
patrika.com

Scanned by CamScanner

पत्रिका. सागर, सोमवार, 03 दिसंबर, 2018

स्मरण शक्ति: बाल मुनियों ने बोलीं 22 भाषाएं

बेंगलूरु. 10 साल के जुड़वा बाल मुनि नमिचंद्र सागर व नेमिचंद्र सागर रविवार को यहां पैलेस ग्राउंड में गूगल को मात देते दिखे। मुस्लिम धर्मगुरुओं की मौजूदगी में उन्होंने कुरान की आयतों का उच्चारण कर मंत्रमुग्ध कर दिया। खचाखच भरे सभागार में दोनों ने 22 भाषाएं बोलीं। कार्यक्रम के अंत में उन्हें स्वर्ण जड़ित शतावधान पत्र भेंट किया गया। दोनों ढाई घंटे में 350 गाथा कंठस्थ कर चुके हैं। रविवार को स्मरण शक्ति के नए रेकार्ड का दावा किया गया।

Scanned by CamScanner

अब आचार्य निर्भय सागर बोले- हनुमानजी जैन थे

सिटी रिपोर्टर, भोपाल | राजस्थान विधानसभा चुनाव में हनुमानजी की जाति को लेकर उपजी सियासत के बीच जैन आचार्य निर्भय सागर ने अलग बयान दिया है। यहां से 25 किमी दूर समसगढ़ के पंचबालयति जैन मंदिर में मीडिया से बात करते हुए उन्होंने हनुमानजी को जैन बताया। उनकी बातचीत का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। आचार्य कह रहे हैं कि जैन दर्शन के कई ऐसे ग्रंथ हैं जिनमें हनुमानजी के जैन धर्म से होने की बात लिखी है। जैन धर्म में 24 कामदेव होते हैं।

शेष | पेज 9 पर

अब आचार्य...

इनमें एक हनुमानजी हैं। जैन दर्शन के अनुसार चक्रवर्ती, नारायण, प्रति नारायण, बलदेव, वासुदेव, कामदेव और तीर्थंकर के माता पिता ये सभी क्षत्रिय हुआ करते हैं। आचार्य निर्भय सागर ने बताया कि इनकी संख्या 169 हुआ करती है, जो कि महापुरुष होते हैं। इन महापुरुषों में हनुमान का भी नाम है और कामदेव होने के नाते ये क्षत्रिय थे। उन्होंने कहा कि जैन दर्शन के अनुसार हनुमान पहले क्षत्रिय थे। उन्होंने वैराग्य की अवस्था को धारण किया इसके बाद जंगलों में जाने के बाद हनुमान ने दीक्षा ली।

दैनिक भास्कर, सागर, सोमवार, 03 दिसंबर, 2018

Scanned by CamScanner

दैनिक भास्कर सागर, सोमवार, 03 दिसंबर, 2018

समाज... आर्यिका संघ ने की मुनि संघ की आगवानी

सागर | मुनि योगसागर महाराज के ससंघ भाग्योदय तीर्थ पहुंचने पर आर्यिका विज्ञानमति माता ने ससंघ मुनि संघ की आगवानी की।

संस्था...वृद्धों को समाधि भावना का पाठ सुनाया

सागर | अखिल भारत वर्षीय दिगंबर जैन महिला परिषद वर्धमान शाखा ने आनंद वृद्ध आश्रम में संगोष्ठी आयोजित की। इसमें राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शकुंतला जैन ने वृद्ध जनों से उनके अनुभव जाने ,डॉ. राज लक्ष्मी बमोरिया ने जैन धर्म के अनुसार समाधि भावना का पाठ पढ़ कर सुनाया। कार्यक्रम में नूतन नाहर,किरण मोदी, आशा गोदरे, स्नेह प्रभा, सुगंधी जैन, रिचा नायक, डाली, सीमा शाहगढ़, प्रतिभा ने फल दिए। सरला, संध्या, प्रियंका, सारिका, सीमा भायजी ने वृद्धों ऊनी वस्त्र भी दिए।

Scanned by CamScanner

उत्तराखंड में बाढ़ राहत कार्य के दौरान वायुसेना के जवानों की बहादुरी देख मिली फाइटर पायलट बनने की प्रेरणा

कामयाब होने तक प्रयास करते रहें, अपने सपने का पीछा न छोड़ें

आंचल गंगवाल
वायुसेना की उड़ान शाखा में चयन, अब ट्रेनी फाइटर पायलट

जब मेरा चयन भारतीय वायु सेना की उड़ान शाखा में हुआ तो मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि कठोर तपस्या के बाद मेरा सपना पूरा हो गया है। यकीन नहीं होने का बड़ा कारण यह था कि मैं पहले ही पांच बार इस परीक्षा में फेल हो चुकी थी। इसमें देशभर से छह लाख लोगों ने भाग लिया था। इनमें से 22 लोगों का चयन हुआ, जिनमें पांच लड़कियां हैं। देशभर से चुनी गई पांच लड़कियों में मैं मध्यप्रदेश (नीमच) से अकेली हूं।

बचपन में घर में गरीबी के चलते हमें वे सब चीजें और खिलौने नहीं मिलते थे, जो अन्य बच्चों को उपलब्ध थे। गली में जब अन्य बच्चे छोटी साइकिल चलाते थे तो उन्हें देखकर मेरा मन भी साइकिल चलाने का होता था। पापा सुरेश गंगवाल मेरे लिए साइकिल कहां से लाते, उनके पास भी कोई गाड़ी नहीं थी। रोजाना की जो भी कमाई होती थी, उससे हमारा घर बमुश्किल चल रहा था। पापा नीमच बस स्टैंड पर चाय का स्टाल लगाते थे। उससे इतनी आय नहीं होती थी कि तीन बच्चों वाले परिवार का ठीक से पालन-पोषण कर सकें। जब मैं पांचवीं कक्षा में आई तो पापा के लिए टिफिन लेकर बस स्टैंड जाने लगी। मैं पापा की चाय सर्व करते, पानी पिलाते और लोगों के गिलास धोते हुए देखती थी। मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता था। इसी माहौल में हम दो बहनें व एक भाई को पढ़ाने में पापा ने हर संभव कोशिश की। वे रात को थककर जब घर आते थे तो मैं उनके लिए भोजन की थाली लगाती थी। वे मेरा खूब लाड़ करते थे। आखिर हिम्मत करके वे मुझे एक प्राइवेट इंग्लिश मीडियम स्कूल में दाखिला दिलाने में कामयाब हो गए। पापा को इतनी मेहनत करते देख मेरे सपनों को पंख लगने लगे। सोचती थी कि मैं खूब पढ़ूंगी, बढ़िया सी नौकरी करूंगी और घर के हालात सुधारूंगी। इन्हीं सपनों के साथ मैं कॉलेज तक पहुंच गई। मेरी रुचि बास्केट बॉल में थी, मैं टीम की कप्तान रही। मेरी हाइट 5 फीट 7 इंच होने का फायदा इस खेल में मुझे खूब मिला और मैंने कई टूर्नामेंट जीते। पढ़ाई का जुनून सिर चढ़कर बोल रहा था, इसलिए मैं स्कूल में टॉपर रहती थी। इस कारण मुझे छात्रवृत्ति भी मिलने लगी। इससे मेरी

मंडे पॉजिटिव

पढ़ाई का खर्च पूरा होने लगा। बास्केट बॉल के अलावा रेस में भी मैं अव्वल आती थी। 400 मीटर की रेस में मैं ही जीतती थी। खेल-खेल में मैंने कब बीएससी कर लिया, पता ही नहीं चला। समय जैसे पंख लगाकर उड़ रहा था। इधर, पापा की चाय की दुकान से होने वाली आय नाम मात्र की बढ़ी थी, लेकिन परिवार के खर्च उसके अनुपात में कई गुना ज्यादा थे। मैं जब 12वीं कर रही थी, उसी वर्ष उत्तराखंड में भयानक बाढ़ ने वहां का जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया। उस वक्त हमारे एयरफोर्स के जवानों ने जिस बहादुरी के साथ जोखिम उठाकर लोगों की मदद की, उसने मुझे प्रेरित किया। मैंने तभी ठान लिया कि मुझे वायुसेना में जाना है और इसी तरह जरूरत के समय लोगों की मदद करना है। कॉलेज करने के बाद मैं प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग लेने लगी। मैंने सब इंस्पेक्टर की परीक्षा पास कर ली और ट्रेनिंग के लिए सागर चली गई। ट्रेनिंग के बाद मुझे धार में ज्वाइन करना था। लेकिन मेरा मन तो एयरफोर्स की नौकरी में लगा हुआ था। मुझे उसकी पढ़ाई के लिए समय नहीं मिल पा रहा था। इसी बीच लेबर इंस्पेक्टर परीक्षा का रिजल्ट भी आ गया तो मैंने सब इंस्पेक्टर की ट्रेनिंग बीच में छोड़ दी और घर के पास मंदसौर में लेबर इंस्पेक्टर के पद पर ज्वाइन हो गई। लेबर इंस्पेक्टर रहते हुए मुझे एयरफोर्स की तैयारी के लिए भरपूर समय मिलने लगा।

मैंने इसके लिए पांच बार परीक्षा दी, लेकिन हर बार असफल रही। इसकी परीक्षा वर्ष में दो बार होती है। जब पांचवीं बार में फेल हुई तो मैंने उम्मीद छोड़ दी कि मैं यह परीक्षा पास कर सकती हूं। इधर, पापा ने कहा कि एयरफोर्स में जाने का तुम्हारा सपना है, उसे कैसे छोड़ सकती हो। एक बार और छठा प्रयास करके देख लो। मैंने कहा कि इतनी मेहनत के बाद भी पांचवी बार असफल हुई हूं तो अब मेरा दिल नहीं कर रहा। वैसे भी इस परीक्षा में देशभर से इंटेलिजेंट परीक्षार्थी लाखों की संख्या में भाग लेते हैं। मैं उनसे अपने आप को कमतर समझने लगी। वैसे भी मैं 21 वर्ष की हो चुकी थी और परिवार के लिए मुझे नौकरी की सख्त जरूरत थी। इधर, पापा अपनी बात पर अड़े हुए थे कि तुम मेरे कहने पर आखिरी बार छठा प्रयास कर के देख लो तो मैं पूरी मेहनत से जुट गई। पिछली तैयारियों में क्या खामियां रह गई थीं, उन पर ध्यान दिया। सभी पुराने पेपर सॉल्व कर डाले। आखिरी प्रयास समझकर मैंने जी-जान लगाकर तैयारी की और परीक्षा दे दी। न जाने क्यों इस बार मेरा मन कहने लगा कि मैं सफल हो जाऊंगी। नतीजे का बेसब्री से इंतजार था। 17 जून को जब रिजल्ट आया तो खुशी का ठिकाना नहीं था। मेरे पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। पापा ने खूब आशीर्वाद दिया। मैंने पापा के गले लगकर कहा कि आपने मुझे इस आखिरी प्रयास के लिए कितना फोर्स किया था, उसी का नतीजा है यह। छोटी बहन दिव्यानी भी बास्केट बॉल की नेशनल प्लेयर है। बड़ा भाई इंदौर की प्रायवेट कंपनी में है। आज और बीते कल में बड़ा अंतर आ गया है।

जून में वायुसेना की फाइटर प्लेन विंग में मेरा चयन हो गया। इसके बाद लेटर में ट्रेनिंग शेड्यूल आया। तभी से हैदराबाद में ट्रेनिंग चल रही है। परिवार की बहुत याद आती है। मुझे इंतजार है उस पल का जब मैं ट्रेनिंग पूरी करके परिवार से मिलने नीमच जाऊंगी और सभी मुझे वायुसेना की ड्रेस में देखेंगे तो कैसा लगेगा? वैसे भी यह सब मेरे परिजनों की मेहनत का ही नतीजा है। पापा-मम्मी, भाई-बहन सभी ने तो मुझे आगे बढ़ने में मदद की है।

(जैसा आंचल से बातचीत के आधार पर उनके पिता सुरेश नामदेव ने अभिषेक विद्यार्थी को बताया)

Scanned by CamScanner

67 पिच्छी शामिल होंगी भाग्योदय तीर्थ पंचकल्याणक में

भास्कर संवाददाता | सागर

भाग्योदय तीर्थ परिसर में 8 से 14 दिसम्बर तक पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव आचार्य विद्यासागर महाराज के शिष्य मुनि योगसागर महाराज के सानिध्य में होगा। महोत्सव में 4 मुनिसंघ और 6 आर्यिका संघ शामिल रहेंगे। मुनि सेवा समिति के सदस्य मुकेश जैन ढाना ने बताया कि मुनि योगसागर महाराज और मुनि अभयसागर महाराज विराजमान हैं। इसके अलावा खुरई से मुनि पवित्र सागर, प्रयोग सागर, और गौरझामर से मुनि विमल सागर महाराज ससंघ सागर की ओर विहार कर यहां पहुंचेंगे। जबकि आर्यिका ऋजुमति माता बांदरी, आर्यिका उपशांत मति माता बेगमगंज, आर्यिका गुणमति माता अभाना , आर्यिका अनंतमति माता, आर्यिका भावनामति माता कुंडलपुर, आर्यिका अकम्पमति माता कटनी से विहार कर पंचकल्याणक महोत्सव में आएंगी। पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव के प्रतिष्ठाचार्य ब्रह्मचारी विनय भैया हैं।

पांचो का चयन 4 दिसंबर को

भाग्योदय परिसर में पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव के प्रमुख पात्रों का चयन मुनि योगसागर महाराज के ससंघ सानिध्य में 4 दिसंबर को दोपहर 1:30 होगा।

जिंदगी आसान नहीं, इसे बनाना पड़ता है आसानः मुनिश्री

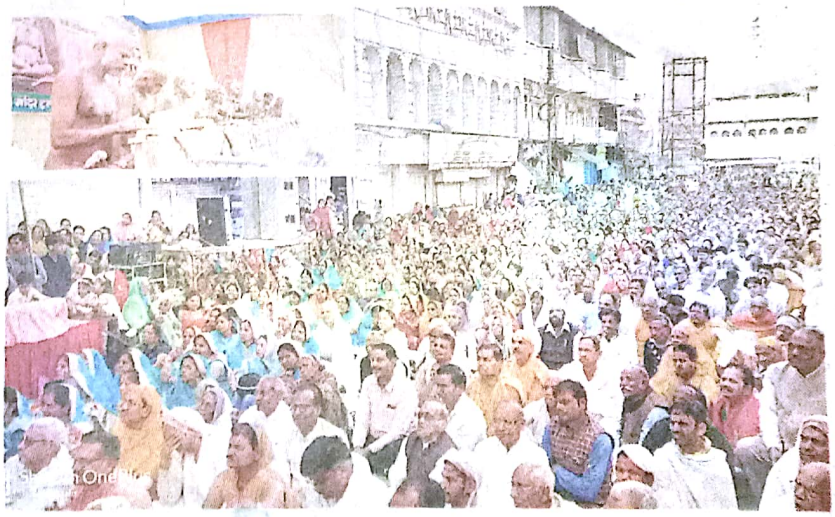

सागर | कटरा नमक मंडी में रविवारीय धर्मसभा में मुनि पूज्य सागर ने कहा कि जिंदगी आसान नहीं है,बनाना पड़ता है,कभी नजरअंदाज करके और कभी बर्दाश्त करके जिन्दगी आसान बनती है। इसके पहले गौराबाई दिगंबर जैन मंदिर में मुनि योग सागर महाराज, मुनि अभय सागर महाराज संसघ सानिध्य में गोपालगंज से विहार कर पहुंचे। जहां तीनों मंदिरों की ट्रस्ट कमेटियों के सदस्यों ने मुनिसंघ की आगवानी की। रविवार को धर्मसभा के पूर्व सिद्धार्थ नंदन पाठशाला और संस्कार केंद्र के बच्चों ने गुरू पूजन किया। चित्रों का अनावरण ट्रस्ट कमेटी के सदस्यों द्वारा किया गया। मुनि संभव सागर महाराज ने कहा कि आज मुनिश्री प्रभात सागर महाराज का अवतरण दिवस है।

सभा में महेश बिलहरा,डॉ जीवनलाल जैन, पंडित दामोदर दास शास्त्री, प्रेमचंद जैन, मुकेश जैन ढाना अशोक वीर, राजकुमार मिनी, मनीष नायक,अनिल मलैया, कैलाश सिंघई, चक्रेश सिंघई, उपस्थित थे।

Scanned by CamScanner